

JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान; कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

वर्ष : 11 • अंक 12 No. 02

December 2021

A Peer-Reviewed and Listed in UGC CARE List
ISSN 2278-4632

संपादक
डॉ. बी. एल. भादानी
प्रोफेसर

प्रबंध संपादक
श्याम महर्षि



मरुभूमि शोध संस्थान
संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

INDEX

S.No.	TITLE	Page No.
1	बालकृष्ण भट्ट के निबंधों की सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि	1
2	शाब्दबोध-स्वरूप	7
3	ROLE OF MFIs IN WOMEN ENTREPRENEURSHIP – A STUDY OF SKDRDP	11
4	MODEL PREDICTIVE CONTROL USING HYBRID RENEWABLE ENERGY SYSTEM FOR EFFICIENT LOAD MANAGEMENT: A REVIEW	17
5	CLASH OF CULTURE IN HENRY JAMES'S <i>THE POTRAIT OF A LADY</i>	23
6	A STUDY ON THE CONCEPT OF CYBERCRIME AND ITS LEGAL ASPECTS	29
7	वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपादेयता	37
8	AN ANALYSIS REGARDING INTERROGATION ON FUNCTIONING OF FIREWORKS	41
9	A CRITICAL STUDY OF SEXUAL HARASSMENT OF WOMEN AT WORKPLACE IN INDIA	47
10	A STUDY ON VIDEO SUBTITLES BASED ACTIVITIES TO ENHANCE LSRW SKILLS AT THE TERTIARY LEVEL LIMITED ENGLISH PROFICIENT (LEP) LEARNERS – AN ANALYSIS	50
11	ROLE OF INCLUSIVE GROWTH TOWARDS ECONOMIC DEVELOPMENT OF THE NATION	54
12	SAPTIO -TEMPORAL ANALYSIS OF THE PERFORMANCE OF MGNREGA RURAL DEVELOPMENT PROGRAMME IN GADAG DISTRICT, KARNATAKA	62
13	A STUDY ABOUT THE COMMON DISEASES IN CATTLE AND IT'S AHM SENSORS BASED ON IOT	75
14	FORMULATION AND CHARACTERIZATION POLOXAMER STABILIZED CHITOSAN NANOPARTICLE FOR CONTROL RELEASE AND BIOAVAILABILITY ENHANCEMENT OF RIVAROXABAN	81
15	PHYTOCHEMICAL SCREENING, QUALITATIVE EVALUATION AND ANTIOXIDANT POTENTIAL OF <i>TRIDAX PROCUMBENS</i>	93
16	A STUDY ON TRAINING AND DEVELOPMENT IN ANDHRA PRADESH SOUTHERN POWER DISTRIBUTION COMPANY LIMITED (APSPDCL) WITH REFERENCE TO CHITTOOR DIST	103
17	A STUDY ON IMPACT OF COMPETENCY BASED HR PRACTICES ON FOSTERING ORGANISATIONAL CHANGE AND DEVELOPMENT IN SELECTED BPO COMPANIES IN SHIVAMOGGA	107
18	अरुणाचल प्रदेश के तानी समुदाय की दार्शनिक मान्यताएँ	114

✓ बालकृष्ण भट्ट के निबंधों की सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि

डॉ. राजेंद्र यादव सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, (मध्य प्रदेश) 470003
सौरभ सिंह शोध-छात्र हिंदी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, (मध्य प्रदेश) 470003

सारांश :

भारतीय समाज में चल रहे सामाजिक, राजनीतिक उथल-पुथल के बीच यह प्रासंगिक हो जाता है कि राजनैतिक और सामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक, तार्किक और व्यवस्थित तरीके से अध्ययन किया जाय, जिससे समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को कम किया जा सके। आधुनिक काल का पहला चरण किस प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा था और तत्कालीन बुद्धजीवियों ने किस प्रकार समाज को जागृत कर उन्हें नया सूर्योदय लाने के लिए प्रेरणा दी, इसका वर्णन हमें बालकृष्ण भट्ट जी के निबंधों में सहज ही मिल जाता है। भारतेंदुयुगीन साहित्य और पत्रकारिता में बालकृष्ण भट्ट के निबंध और उनकी समूची पत्रकारिता के केंद्र में समाज उत्थान और समाज सुधार ही प्रमुख रहा है। बालकृष्ण भट्ट का यह मानना था कि भारतीय समाज जिन समस्याओं से तत्कालीन समय में जूझ रहा है, उससे निजात पाना है तो शिक्षा इसके लिए सबसे आवश्यक हथियार है। भारत की सामाजिक स्थिति सुशिक्षा के द्वारा ही सुधारी जा सकती है।

कीवर्ड :

भारतीय समाज, नवजागरण, भारतेंदुयुगीन साहित्य, प्रासंगिक, बालकृष्ण भट्ट, निबंध, सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक आदि।

प्रस्तावना :

19 वीं शताब्दी में नवजागरण की जो लहर हम देखते हैं, वह भारतीय समाज की आंतरिक और बाह्य शक्ति के रूप में व्यक्त हुई, जिस कारण मध्यकाल का धार्मिक आवरण धुंधला पड़ा और इसकी जगह तर्क और विवेक ने ले ली। इस तर्क और विवेक के कम्पन को सबसे पहले बंगाल में महसूस किया गया। स्त्री-शिक्षा, बाल-विवाह, सती-प्रथा, बहुविवाह, छुआछूत, जात-पात, धार्मिक आडम्बर, सामाजिक ऊंच-नीच आदि आन्दोलनों को समाज की स्थिति सुधारने के लिए चलाया गया। इन आंदोलनों की मूल चिंताओं के साथ ही साहित्यकारों की कलम भी समाज-सुधारकों के कदम से कदम मिलाकर उनका सहयोग करने लगी। यही कारण है कि समाज के प्रत्येक वर्ग ने नवजागरण की चेतना को अपने स्तर पर आगे बढ़ाने का कार्य किया। बंगाल में राजा राममोहन राय और ईश्वरचंद विद्यासागर तो वहीं पंजाब और अन्य राज्यों में श्रद्धाराम फिल्लौरी और दयानंद सरस्वती ने शिक्षा, स्वतंत्रता जैसे आदि महत्त्वपूर्ण विषयों का प्रचार-प्रसार किया। वर्णित समाज-सुधारकों के द्वारा किये गए कार्यों का बढ़ाव ही भारतेंदुयुगीन लेखकों को पूँजी के रूप में प्राप्त हुआ और इसे भारतेंदु हरिश्चंद्र सहित बालकृष्ण भट्ट सरीखे विद्वानों ने नवजागरण सम्बन्धी तत्वों के साथ स्वीकार करके अपनी साहित्यिक रचनाओं में स्थान दिया। बालकृष्ण भट्ट इस भूमिका को निभाने में सबसे अग्रणी रहे हैं। "धर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य आदि के प्रति, भट्ट जी के विचारों को देखते हुए कह सकते हैं कि वह अपने युग के सबसे महान विचारक थे।"¹

हिंदी साहित्य संपूर्ण इतिहास के एक सफल पत्रकार, नाटककार एवं निबंधकार के रूप में ख्याति अर्जित करने वाले बालकृष्ण भट्ट का जन्म उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जनपद में 3 जून, सन् 1844 ई. को हुआ था। गद्य प्रधान कविता के जनक के रूप में विख्यात भट्ट जी को आधुनिक हिंदी साहित्य के शीर्ष निर्माताओं में अद्वितीय स्थान प्राप्त है। भट्ट जी का पारिवारिक परिवेश शिक्षा के लिए उपयुक्त रहा, जिसमें इनकी सुशिक्षित माता का सबसे बड़ा योगदान रहा। माता इनके पिता जी से अधिक शिक्षित एवं विदुषी थी। अतः बाल्यकाल से ही माता के ज्ञान का बहुत ही गहरा प्रभाव इन पर पड़ा, जिस कारण एक मेधावी छात्र के रूप में इन्होंने अपना बाल्यकाल पूरा किया। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मिशन स्कूल से शुरू हुई, परन्तु परिवेश और दीक्षा पद्धति इन्हें पसंद नहीं आई यही कारण है कि ये ज्यादा दिनों तक स्कूल से जुड़े नहीं रह पाए और घर पर ही ज्ञानार्जन करना शुरू किया। घर पर अध्ययन के दौरान भट्ट जी ने संस्कृत के साथ ही साथ हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और फारसी भाषाओं का अच्छे से अध्ययन किया और साथ ही इन सभी भाषाओं का